Sl No. of Q.P. : 6443

Unique Paper Code	:	12051602 (OC)
Name of Paper	:	Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein
Course	:	B.A. (Hons.) Hindi : CBCS (OC)
Semester	:	VI
Duration	:	3 hours
Maximum marks	:	75

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 3+7 = 15

मेरी इस घायल पीठ को घृणा से ना देखो। इस पर तुम्हारे बड़े , अन्न, रस्सियां यहां तक की उपले लादकर दूर-दूर तक ले जाते थे ।जाते हुए मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते हुए मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबड़ के पहिए वाली चमड़े की कोमल गद्दीदार फिटिंग में बैठकर भी वैसा आनंद प्राप्त नहीं कर सकते ।मेरी बलबलाहट उनके कानों को इतनी सुरीली लगती कि तुम्हारे बगीचों में तुम्हारे गवाइयों तथा तुम्हारी पसंद की बीवियों के स्वर भी तुम्हें इतने अच्छे ना लगते होंगे।

अथवा

यदि यदि लोग की वस्तु ऐसी है जिससे सब को सुख और आनंद है तो उस पर जितना ही अधिक ध्यान रहेगा, रक्षा के भाव की एकता के कारण परस्पर मेल की उतनी ही प्रवृत्ति होगी । यदि दस आदमियों में से सबकी यह इच्छा है कि कोई मंदिर बना रहे; गिरने पड़ने ना पाए अथवा और अधिक उन्नत और सुसज्जित हो तो यह सम्मिलित इच्छा एक सूत्र होगी। मिलकर कोई कार्य करने से उसका साधन अधिक या सुगम होता है। यह बतलाना पर उपदेश कुशल नीतिज्ञो का काम है ।मेरे विचार का विषय नहीं। मेरा उद्देश्य तो मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों की छानबीन है जो निश्चयात्मिका वृत्ति से भिन्न होती है।

(ख) यह जो मेरे सामने कुटज का लहराता पौधा खड़ा है वह नाम और रूप दोनों में अपनी अपराजेय जीवन शक्ति की घोषणा कर रहा है इसीलिए यह इतना आकर्षक है ।नाम है कि हजारों वर्षों से जीता चला आ रहा है ।कितने नाम आए और गए!दुनिया उनको भूल गई ।वह दुनिया को भूल गए!मगर कुटज है की संस्कृत की निरंतर स्फीयमान शब्द राशि में जो जमके बैठा था बैठा ही है और रूप की तो बात ही क्या । बलहारी है इस मादक शोभा की चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निः श्वास के समान धधकती लू में यह हरा-भरा है और भरा भी है। दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्र अज्ञात जल स्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है।

अथवा

मन फिर घूम गया कौशल्या की ओर लाखों-करोड़ों में कौशल्याओं की ओर और लाखों करोड़ों कौशल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम अरूप कौशल्या की ओर। इन सब के राम बन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बंधा है ?और उसी के भीगने की इतनी चिंता है। क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने से पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है।
क्या बात है कि तुलसी ने कानन को सत अवध समाना कहा और चित्रकूट में ही पहुंचने पर उन्हें काल की कुटिल कुचाल दीख पड़ी ।"
क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोक मानस के राजाराम बने हुए हैं ? कहीं ना कहीं इन सब के बीच एक संगति होनी चाहिए ([redacted])

2. जुवान निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

आचरण की सभ्यता निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. हरि शंकर परसाई की व्यंग शैली की विवेचना वैष्णव की फिसलन निबंध के आधार पर कीजिए। (15)

अथवा

कुटज निबंध के आधार पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की भाषा शैली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. रामविलास शर्मा कृत नए संघर्ष के आधार पर निराला के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'अपनी खबर' में उग्र जी ने अपने जन्म और नामकरण के संबंध में कौन-कौन से दृष्टांतों का वर्णन किया है ? उदाहरण सहित बताइए।

5. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित सुभान खान रेखा चित्र के आधार पर सुभान खान के चरित्र की विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा के आधार पर राहुल सांकृत्यायन की घुमक्कड़ वृत्ति पर प्रकाश डालिए।